BA Part II (Sub/Hons)

Dr. Chiranjeev Kr. Thakur
Sociology

निर्धनता (Poverty) => निर्धनता भारतीय समाज की एक अत्यंत गंभीर एवं जटिल समस्या है। निर्धनता ही अनेक सा० समस्याओं की जननी है। अपराध, बाल-अपराध, भिक्षावृत्ति, वेश्यावृत्ति, गंदी बस्तियाँ जैसी सामाजिक समस्याओं का मूल कारण निर्धनता को ही कहा जा सकता है। निर्धनता केवल एक सामाजिक समस्या के रूप में ही नहीं वरन् मुख्य रूप से आर्थिक समस्या है। भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक कालों और भिन्न-भिन्न समाजों में निर्धनता को अलग-अलग माप में देखा गया है। कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था में निर्धनता अथवा दरिद्रता का जो स्वरूप होता है। वह औद्योगिक अर्थव्यवस्था में पायी जाने वाली निर्धनता से लगभग भिन्न होता है। इसी प्रकार एक समय विशेष में पायी जाने वाली निर्धनता इसी समय में पायी जाने वाली निर्धनता से भिन्न होती है। निर्धनता की माप के संबंध में यह कहना उचित सर्वमान्य है कि किसी देश में संपन्नता या निर्धनता के मापने का तरीका क्या है। निर्धनता को मापने का एक उपाय यह हो सकता है कि किसी समय विशेष में उस राष्ट्र में उपभोग के लिए प्रयुक्त वस्तुओं एवं सेवाओं की

देखा जाए, इसे ही सामान्यतः राष्ट्रीय आय या लाभांश का
नाम दिया जाता है. परंतु यह कोई सरल कार्य नहीं है, क्योंकि
इस बात का मतभेद रहा है कि कोई विशिष्ट वस्तु राष्ट्रीय आय
में सम्मिलित की जानी चाहिए अथवा नहीं? जैसे घर पर काम
करने वाली स्त्रियां द्वारा प्रदत्त सेवाओं को राष्ट्रीय आय में
लिया जाए या नहीं। राष्ट्र संघ के राष्ट्रीय आय सांख्यिकी संबंधी
एक प्रकाशन के अनुसार निवल राष्ट्रीय उत्पादन का वास्तविक
मूल्यों का एक समूह होता है, जो एक विशिष्ट अवधि
पर्यंत आर्थिक क्रिया की सभी शाखाओं के सहयोग से बनता
है और जिसमें बाह्य देशों से हुई निवल आय भी सम्मिलित
है।